

लेखक परिचय:

फणीश्वर नाथ 'रेणु' हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कथाकार हैं, जिन्होंने ग्रामीण भारत की मिट्टी की सोंधी गंध को अपने साहित्य में जीवंत कर दिया। वे प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा के उत्तराधिकारी माने जाते हैं, परंतु उन्होंने उस यथार्थवाद में लोकजीवन की आत्मा और संवेदना का रंग भी घोला। उनकी प्रमुख रचनाओं में “मैला आँचल,” “परती परिकथा,” “ठेठ हिंदी,” “तीसरी कसम” आदि उल्लेखनीय हैं।

“तीसरी कसम” रेणु की ऐसी कहानी है जो भारतीय ग्रामीण संस्कृति, नैतिकता और प्रेम की पवित्रता को एक नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है।

कहानी का सारांश:

“तीसरी कसम” का नायक हीरामन एक ईमानदार, मेहनती और सरल स्वभाव का बैलगाड़ीवान है। उसका जीवन संघर्षों से भरा है, परंतु वह अपने नैतिक सिद्धांतों और आत्मसम्मान से कभी समझौता नहीं करता। उसके दो बैल—हीराकांत और हीरालाल—उसके सबसे बड़े साथी हैं।

कहानी में हीरामन के जीवन की तीन घटनाएँ हैं जो उसे तीन “कसमें” खाने पर मजबूर करती हैं। यही तीन कसमें कहानी की संरचना और उसके जीवन-दर्शन का मूल आधार बनती हैं।

पहली कसम:

हीरामन एक बार तंबाकू के बोरे लेकर रेलवे स्टेशन जा रहा होता है। रास्ते में पुलिस उसे रोक लेती है और रिश्वत माँगती है। हीरामन को अपमान सहना पड़ता है और वह यह पहली कसम खाता है कि अब वह कभी तस्करी का सामान नहीं ढोएगा।

यह कसम उसकी ईमानदारी, नैतिक दृढ़ता और आत्म-सम्मान का प्रतीक है।

दूसरी कसम:

दूसरी बार वह मेले में जूट के बोरे ले जाता है। वहाँ सर्कस में वह देखता है कि जानवरों के साथ क्रूरता की जाती है—घोड़ियों और हाथियों को कोड़े मारे जाते हैं। यह दृश्य देखकर हीरामन का मन द्रवित हो जाता है और वह दूसरी कसम खाता है कि वह कभी ऐसे मेलों में नहीं जाएगा जहाँ जानवरों पर अत्याचार किया जाता हो।

यह कसम उसके करुणा-भाव और मानवीय संवेदना को दर्शाती है।

तीसरी कसम:

तीसरी और सबसे महत्वपूर्ण घटना तब घटती है जब उसे एक बार नौटंकी की नायिका हीराबाई को अपने बैलगाड़ी में बिठाकर पास के गाँव तक ले जाने का काम मिलता है।

शुरू में वह हिचकिचाता है क्योंकि समाज में नौटंकी की स्त्रियों को “अच्छी औरत” नहीं माना जाता। परंतु जब हीरामन उसे देखता है, तो उसके मन में एक अजीब-सी श्रद्धा और सम्मान की भावना जन्म लेती है।

रात के सफर में दोनों के बीच बातचीत होती है। हीरामन अपने गाँव, बैलों और जीवन की छोटी-छोटी बातों को बड़े गर्व से बताता है। हीराबाई उसकी सादगी, सच्चाई और मासूमियत से प्रभावित होती है। उसने अपने जीवन में ऐसे सच्चे और भले इंसान बहुत कम देखे थे।

हीरामन उसे एक गीत सुनाता है — “मारे गए गुलफाम” — जो उनके भावनात्मक संबंध का प्रतीक बन जाता है।

जब हीरामन गाँव पहुँचता है, तब वह पहली बार हीराबाई को नौटंकी में मंच पर देखता है। लोग उस पर भद्दी टिप्पणियाँ करते हैं, सीटियाँ बजाते हैं। हीरामन यह सब देखकर बहुत आहत होता है, क्योंकि उसके मन में हीराबाई के लिए अत्यंत पवित्र भाव हैं।

वह उस रात बहुत दुखी होकर अपनी तीसरी कसम खाता है —

“अब कभी किसी नौटंकी की औरत को अपनी गाड़ी में नहीं बिठाऊंगा।”

यह कसम हीरामन के प्रेम, नैतिकता और समाज के बीच के टकराव की पराकाष्ठा है।

चरित्र-चित्रण:

(1) हीरामन:

हीरामन कहानी का नायक है। वह एक आदर्श ग्रामीण चरित्र है जो अपनी सादगी, ईमानदारी और संवेदना से पाठक का मन जीत लेता है। वह भले ही अनपढ़ और गरीब है, परंतु उसके भीतर की मनुष्यता किसी भी “शिक्षित” व्यक्ति से बड़ी है।

वह प्रेम को पूजा मानता है, और स्त्री को सम्मान की दृष्टि से देखता है।

(2) हीराबाई:

हीराबाई एक नौटंकी नायिका है, जो समाज की दृष्टि में “आवारा” मानी जाती है, परंतु उसके भीतर भावनाओं की गहराई और आत्म-सम्मान की तीव्र इच्छा है। वह हीरामन की सच्चाई और आदर्शवाद से प्रभावित होकर स्वयं में परिवर्तन महसूस करती है।

वह अपने पेशे के बंधनों से मुक्त नहीं हो सकती, परंतु उसके हृदय में हीरामन के प्रति एक पवित्र भावनात्मक जुड़ाव बन जाता है।

विषय-वस्तु और भावार्थ:

“तीसरी कसम” केवल एक प्रेम कथा नहीं है, बल्कि यह मानवीय संवेदनाओं, नैतिकता और सामाजिक यथार्थ की कहानी है।

यह ग्रामीण जीवन की सरलता और शहरी समाज की कृत्रिमता के बीच के विरोध को उजागर करती है।

तीनों कसमें क्रमशः नैतिकता, करुणा और आत्म-सम्मान की प्रतीक हैं।

हीरामन का चरित्र यह सिखाता है कि भले ही परिस्थितियाँ कठिन हों, पर मनुष्य को अपनी सच्चाई और आदर्शों से विचलित नहीं होना चाहिए।

सामाजिक सन्देश:

कहानी समाज के उस दोहरे मानदंड को उजागर करती है जहाँ एक ओर स्त्रियों से आदर्श की अपेक्षा की जाती है, और दूसरी ओर वही समाज उन्हें अपमानित भी करता है।

हीराबाई जैसी स्त्री, जो कला के माध्यम से लोगों का मनोरंजन करती है, उसे समाज सम्मान नहीं देता।

रेणु इस कथा के माध्यम से कहते हैं कि हर स्त्री सम्मान की अधिकारी है, चाहे उसका पेशा कुछ भी हो।

भाषा और शैली:

कहानी की भाषा आंचलिक रंगों से भरी हुई है। इसमें मिथिला क्षेत्र की लोकभाषा, लोकगीत, कहावतें और बोलचाल की सादगी झलकती है।

रेणु की शैली चित्रात्मक, संवादप्रधान और जीवन से सीधी जुड़ी हुई है।

उनकी भाषा में न केवल भावनाएँ हैं, बल्कि एक पूरा ग्रामीण संसार साँस लेता है।

निष्कर्ष:

“तीसरी कसम” फणीश्वर नाथ रेणु की उत्कृष्ट कहानियों में से एक है। यह कहानी जीवन के उन मूल्यों को सामने लाती है जो आधुनिक समाज में धीरे-धीरे खोते जा रहे हैं—ईमानदारी, सादगी, करुणा और पवित्र प्रेम।

हीरामन और हीराबाई का संबंध समाज की सीमाओं को पार कर एक आत्मीय और मानवीय स्तर पर पहुँच जाता है।

यह कहानी हमें सिखाती है कि प्रेम केवल आकर्षण नहीं, बल्कि सम्मान, त्याग और श्रद्धा है।

रेणु का यह संदेश कालातीत है —

“मनुष्य की सच्ची पहचान उसकी संवेदनाओं से होती है, न कि उसके पेशे या पद से।”

इसीलिए “तीसरी कसम” केवल एक कहानी नहीं, बल्कि भारतीय लोकजीवन और मानवीय हृदय की गहराई का दस्तावेज़ है।